मातृभाषा
केंद्रित विशेषांक

वर्धा डायरी

(मार्च, २०२५। अंक - ०६)

आवरण कथा

अंकिता पटेल

कहानी

विसर्जन / पूजा पाढ़ी

प्रधान संपादक
विवेक रंजन सिंह

आवरण चित्र
अभय दुबे

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के छात्रों का उपक्रम

“निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल, बिन
निज भाषा ज्ञान के,
मिटन न हिय के सूल”

• भारतेंदु हरिश्चंद्र

जो रचेगा, वही बचेगा...

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(पूर्ण रूप से छात्रों द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका)

वर्धा डायरी

दो शब्द

'वर्धा डायरी' ई पत्रिका महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के छात्रों द्वारा प्रकाशित की जा रही है। यह पत्रिका पूर्ण रूप से एक खुला मंच है जहां आप अपने रचनात्मक विचारों को पाठकों के साथ साझा कर सकते हैं। इस पत्रिका को शुरू करने का उद्देश्य यही है कि हिंदी विश्वविद्यालय परिसर में अध्ययनरत छात्रों के भीतर छिपी रचनाधर्मिता को जागृत कर, उन्हें सबके सामने प्रस्तुत किया जाए। हिंदी विश्वविद्यालय अपने जिन उद्देश्यों को लेकर स्थापित किया गया था, उसको पूरा करने में हमारा एक छोटा सा योगदान है। हम चाहते हैं कि आप अपनी रचनाओं से एक सकारात्मक वातावरण स्थापित करने में हमारी मदद करें। हमारा आपसे आग्रह है कि आप अपनी जिन भी रचनाओं को भेजें वो आपकी मूल हों । इस पत्रिका को हम सिर्फ़ विश्वविद्यालय परिसर तक सीमित न करके, पूरे वर्धा शहर के लिए खोल रहे हैं। ऐसे में बापू और विनोबा की धरती वर्धा व उसकी विशेषताओं से भी अवगत कराना हमारा उद्देश्य है।

विवेक रंजन सिंह
(प्रधान संपादक)

अभय दुबे
(संपादक व छायाकार)

गोविंद राय
(संपादक)

राखी
(तकनीक सलाहकार)

संपादकीय संपर्क
संपादक - वर्धा डायरी
चंद्रशेखर आजाद छात्रावास, कक्ष संख्या - २३
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट - हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स,
वर्धा ४४२००१ (महाराष्ट्र)
ईमेल - wardhadiary@gmail.com

सहयोग - आलोक चतुर्वेदी , दिव्यांशु झा , गोरक्ष पोफली , हर्ष आनंद ,
प्रियांशु कुमार , रागिनी , शिया गोस्वामी

आवरण चित्र एवं पृष्ठ सज्जा - अभय दुबे

© प्रकाशकाधीन

• संपादन एवं प्रबंध पूर्णतया अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

प्रारंभ वर्ष - सितंबर , २०२४

मुद्रक - स्व - मुद्रित ई पत्रिका

(प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली सामग्री अथवा रचनाओं के प्रकाशन हेतु संपादक का निर्णय ही मान्य होगा। प्रकाशित रचनाओं की रीति - नीति या विचारों से संपादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में प्रकाशक की पूर्ण जिम्मेदारी होगी।)

(पत्रिका पूर्ण रूप से अभी ई - पत्रिका है और इसके प्रिंट करने या उसके वितरण की इजाज़त अभी नहीं है। किसी विशेष स्थिति में प्रकाशक के अनुमति से ही इसके प्रिंट निकलवाए जा सकते हैं। यदि बिना प्रकाशक की अनुमति से कोई इसके प्रिंट को निकलवाता है और उसका वितरण करता है तो कानूनी कार्यवाई हेतु वह स्वयं ज़िम्मेदार होगा। प्रेस व रजिस्ट्रेशन अधिनियम के अनुसार जब इसका आईएसएसएन अंक प्राप्त हो जायेगा, तभी इसे प्रिंट माध्यम में वितरण किया जा सकता है।
किसी भी आपत्ति या विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र वर्धा (महाराष्ट्र) होगा।

(इस पत्रिका का संपादन मंडल अस्थाई है। हर अंक में संपादन मंडल का विस्तारव बदलाव किया जाता रहेगा।)

इस अंक में

अपनी बात	प्रधान संपादक की कलम से / 08
संपादकीय	मातृभाषा में पढावल , बड़ा जल्दी याद होला / अभय दुबे / 09
कहानी	चंदू की चौखट / अमन कुमार / 10
कविता /	मां की व्यथा / अमन कुमार / 12
वर्धा डायरी	भूखे भजन न होई गोपाला / विवेक रंजन सिंह / 13
कविताएँ	अमन कुमार , स्नेहा राज , विश्वास सिंह (कौरवी) , कु . सहिली झंझाड़े (मराठी) , दिव्यांशु प्रशांत झा (मैथिली / 14 - 17)
लेख	अपनी मातृभाषा की सुगंध में नहा लिया / राहुल कुमार / 17
आवरण कथा	मातृभाषा हमारी पहचान , हमारी आत्मा / अंकिता पटेल / 19
कविता	कविता (अवधी) / यशवर्धन / 24
अनुवाद	गीता शतक का अवधी अनुवाद / आकांक्षा सिंह / 25
कहानी	विसर्जन / पूजा पाढ़ी / 30

कहानी , कविता या लेख भेजें और पायें उत्कृष्ट लेखक का पुरस्कार .

प्रथम पुरस्कार - एक हजार रुपये
द्वितीय पुरस्कार - सात सौ रूपया
तृतीय पुरस्कार - पांच सौ रूपया

(अंतिम तीन बेहतर लिखने वाले को सांत्वना पुरस्कार स्वरुप पुस्तक भेंट की जायेगी)

शुभ - संदेश

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी समाज की रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ के छात्र भाषा और साहित्य दोनों के क्षेत्र मे सक्रिय रहे हैँ यह खुशी की बात है कि विश्वविद्यालय परिसर से एक ई पत्रिका (वर्धा डायरी)की शुरुआत होने जा रही है। पत्रिका से जुड़े छात्रों को इसके लिये बधाई और मेरी शुभकामनायें।

श्री विभूति नारायण राय (पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

प्रकाश और अंधकार का युग्म एक सतत और अनिवार्य संघर्ष की याद दिलाता है । भाषा प्रकाश का ही एक रूप है जिससे दुनिया अर्थवान हो उठती है और उसे भी अंधकार का प्रतिरोध करना पड़ता है । पर भाषा की शक्ति प्रकाश से थोड़ा आगे बढ़ती है क्योंकि वह वर्तमान से आगे बढ़ कर भविष्य रचती रचाती चलती है । भाषा के गर्भ में पलती रचनाशीलता युग का निर्माण करती है । हमारी शुभकामना है कि " वर्धा डायरी " काल की संवेदना को थामे भाषा के सामर्थ्य की वाहिका बने । लोक तंत्र की प्राण नाड़ी है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और डायरी उसे जीवित करने का उद्यम कर रही है । स्वराज की भूमि वर्धा से आरंभ हो रही विचारों के स्वराज की यह यात्रा मंगलमय हो ।

श्री गिरीश्वर मिश्र (पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय् वर्धा के छात्रों द्वारा द्वारा शीघ्र प्रकाशित की जा रही ई पत्रिका वर्धा डायरी के लिए मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस डायरी के प्रकाशन से छात्रों के बीच साहित्यिक रचनाओं और अध्ययन पठन-पाठन के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और इन्हीं के बीच से भविष्य के लेखक उभरकर सामने आएंगे। रचनात्मकता का एक पहलू यह भी है कि यह छात्रों को एक श्रेष्ठ और मानवीय संवेदना से युक्त विवेकशील नागरिक बनाएगी।मेरी ओर से समस्त संपादक मंडल को अनंत शुभकामनाएं।

श्री अशोक मिश्र कहानीकार व पूर्व संपादक बहुवचन पत्रिका (महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

शुभ - संदेश

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय से मेरा संबंध बहुत पहले का है, जब प्रथम कुलपति अशोक वाजपेयी जी ने एक अकादमिक गोष्ठी इलाहाबाद में आयोजित की थी । डॉक्टर गोपीनाथन के कार्यकाल में भी आयोजनों में रवीन्द्र कालिया और मैं बराबर आमंत्रित रहे।सबसे स्फूर्तिदायक समय कुलपति श्री विभूति नारायण राय का था । उन्होंने त्रैमासिक इंग्लिश पत्रिका 'हिंदी' को पुनर्प्रतिष्ठित किया । मुझे पौने पांच वर्ष इसके संपादन का अवसर मिला।बहुत खास रचनाएं अनुवाद में प्रकाशित करने का सुख प्राप्त हुआ ।

विश्वविद्यालय का परिसर हिंदी साहित्य की महक से भरा हुआ है । बड़े बड़े विद्वान व साहित्यकार यहंसमे समय पर शोभा बढ़ाते रहे हैं। यहां की वीथियों के नाम साहित्य मनीषियों पर हैं। नागार्जुन सराय का शांत,सुरम्य वातावरण,स्वच्छ सादा भोजन और खुशनुमा मौसम प्राणदायी है ।

मेरी शुभकामनाएं लें । वर्धा विश्वविद्यालय प्रति वर्ष प्रगति के उत्कर्ष पर रहे और विद्यार्थियों में अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति अनुराग विकसित करे ।

ममता कालिया
वरिष्ठ साहित्यकार

प्रधान संपादक की कलम से...

विवेक रंजन सिंह
एम. ए., जनसंचार विभाग
म. गां. अं.हिं.वि.,वर्धा

जय सिया राम पाठक लोग ,

उम्मीद बा कि पिछला बार के अंक तोहका सबका नीक लाग होई . बसंत बहार के अंक मा बहुत अइसन चीज पढे के मिला होई जवन आप सब पहिल बार पढ़े होबा . आप सभन के प्रेम असीरवाद बा कि हम सतवां अंक निकारय जात बाटी . हर अंक का हम तनी देर से लावे के बरे क्षमा चाहीथी मुला का करी , छोट मोट टीम बनाय के काम करइ के पराथा . सबके आपन आपन व्यस्तता बा , पढ़ाई लिखाई बा , जवन कि सबसे ज्यादा जरूरी भी बा . पढ़ाई लिखाई के माहौल के बरे ही ई सुरुआत केहे बाटी .

यहि बार के अंक मातृभाषा पा केन्द्रित केहे बाटी . पत्रिका के संपादक और छोटका भाई अभय के मन रहा कि ई बार के अंक आपन आपन बोली भाषा से जुडा होई के चाही . हमहूँ मानि गये . अभय अच्छा सा आवरण पृष्ठ तैयार किहें जोन कि आप सब ऊपर का पन्ना में देख लेहे होबा . आवरण चित्र सबका नीक लाग . लेख भी अच्छा अच्छा आयें . कुछ लेख मातृभाषा के महत्व के दर्शावत लेख बाटे तो कुछ उही बोली भाषा में बा जहाँ के लेखक बाटें . कुल मिलाय के ई वाला अंक अब तक के अंकन मा सबसे अलग अंक बा . अब हमहू सोचे कि जब अंक आपन बोली भाषा पा केन्द्रित बा तो हम भी आपन बात अपने मातृभाषा अवधी मा कही .

कुछ दिना पहिले हमरे विश्वविद्यालय मा मातृभाषा पर आधारित एक कार्यक्रम भा रहा जेहमा हम आपन बात अवधी में और अभय आपन बात भोजपुरी में रखे रहें . अच्छा कार्यक्रम भा रहा . आपन अवधी का और अछे से जाने समझे का मिला .

यहि अंक मा हिन्दी के साथ साथ मराठी , अवधी , भोजपुरी , मैथिली , कौरवी भाषा में भी लेख पढे का मिली और हमका विश्वास बा कि आप सबका जरूर पसंद आई . जबलपुर से आकांक्षा सिंह तो गीता शतक का अवधी अनुवाद भेजे बाटिन , जवन कि अपने आप मा अनूठा बा . आकांक्षा सिंह पिछले तीन अंक से लगातार लेख भेजत बाटिन . यही क्रम मा अंकिता पटेल के लेख हिन्दी में आवा बा लेकिन ओहमा ऊ आपन भोजपुरी के मिठास घोल के भेजे बाटीं . कौरवी और मैथिली भाषा मा कविता आय बा . सागर विश्वविद्यालय के एक मित्र कहानी और कविता भेजे बाटें .

हमका खुसी बा कि जोन काम हम फाने रहे ओहमा अब दूर दूर से साथ मिलत बा . प्रियांशु और हर्ष काफी मेहनती युवा बाटें , दूनों ई समय पत्रकारिता के पढ़ाई के साथ यहि डायरी के प्रबंध सम्पादन मंडल में भी बाटें .

आप सब आपन सहयोग बनाये रखें . वर्धा में दुई साल पूरा होय वाला बा और आगे राम जानय कहाँ रहब मुला आप सब के साथ बना रही तो ई पत्रिका के हम बड़े स्तर पर लई जाय मा कामयाब होब . अब आप सब ई पत्रिका का गूगल प्ले स्टोर पर जाय के नॉट नल एप पर भी पढ़ सकाथा . जय सिया राम सबका ....